दादा भगवान-श्रीमुख से सहज स्फुरित वाणी

अंतराय कर्म

संकलनकर्ता :
आप्तपुत्र श्री पुलिनआनंदजी

भाषान्तरकार :
राजेन्द्र के. जैन

जय सच्चिदानंद संघ

□ ANTARAYA KARMA

प्रकाशक
जय सच्चिदानंद संघ
सुधीर बी. शाह (सकल संघपति)
36, पार्श्वनाथ चेम्बर्स, रिज़र्व बैंक की गली में, इन्कमटैक्स ओफ़िस के पास,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-380 014 ✆ : (079) 26644101
E-mail: akramvignan@gmail.com

© सर्व हक प्रकाशक के स्वाधीन

मूल्य : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी नहीं जानता' यह भाव

	आवृत्ति	मास	वर्ष	प्रतियाँ
❑	प्रथम	फरवरी	2016	5,000

प्राप्तिस्थान

जय सच्चिदानंद संघ
36, पार्श्वनाथ चेम्बर्स,
रिज़र्व बैंक की गली में,
इन्कमटैक्स ओफ़िस के पास,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-380 014
✆ : (079) 26644101
E-mail: akramvignan@gmail.com

जय सच्चिदानंद संघ

अक्रम विज्ञान फाउन्डेशन
8, ज्ञानसागर सोसायटी,
बेन्क ओफ बडौदा के पास,
फतेहपुरा, पालडी,
अहमदाबाद-380 007
✆ : (079) 26644101
E-mail: akramvignan@gmail.com

लेसर कम्पोज
जय सच्चिदानंद संघ, 36, पार्श्वनाथ चेम्बर्स, रिज़र्व बैंक की गली में, इन्कमटैक्स ओफ़िस के पास,
आश्रम रोड, अहमदाबाद-380 014 ✆ : (079) 26644101

इस पुस्तिका में भाषा भारती कौटिल्य फ़ोन्ट का उपयोग किया गया है।
यह पुस्तिका CPT के द्वारा छपाई गई है।

मुद्रक
चिराग ओफसेट प्रा. लि., अहमदाबाद-380 022 ✆ (079) 25464747, 25464848

संसारविघ्न-निवारक

दादा भगवान त्रिमंत्र

~ १ ~

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उव्वज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
ऐसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवई मंगलं ॥

~ २ ~

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

~ ३ ~

ॐ नमः शिवाय ॥

॥ जय सच्चिदानन्द ॥

आशीर्वचन

आप्तपुत्र पुलिनानंदजी ने
'अक्रम विज्ञानी' श्री दादा भगवान के सत्साहित्य में से
अंतराय कर्म विषय के ज्ञान-वचनों का
प्रस्तुत पुस्तिका में संचयन और संकलन किया है ।
यह मोक्ष के लिये मोक्षमार्ग के यात्रिकों को
सहायक-प्रकाशक है ।
पूर्वकृत अंतरायों को गलाकर,
नये अंतराय कर्म न पड़ें
उनकी उपयोगमय जागृति के लिये ये अत्यंत उपकारी हैं ।
'अंतराय कर्म' पुस्तिका को खूब-खूब आशीर्वाद सहित
सानंद बधाता हूँ ।

दादाजी के आशीर्वाद
जय सच्चिदानंद

प्रकाशकीय

आप्तपुत्र श्री पुलिनानंदजी ने
संपूज्य श्री दादा भगवान की
त्रिकाल अटल वाणी में
'अंतराय कर्म' विषय के वचनों को सुग्रथित किया है ।
पढ़ते ही हृदय में बस जाये ऐसा दादा का वचनबल
पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर अनुभूत होता है ।
'अंतराय कर्म' ही
आत्मा के वैभव-वीर्य को प्रकट होने में बाधक है,
इसकी सच्ची समझ से
अन्य सात कर्म - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय,
वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र
पंगु (अशक्त) बन जाते हैं ।

'सिद्ध समान' मेरी आत्मा, फिर भी (मुझे) जन्म लेना पड़ा
क्योंकि सारे कर्मों को खपाने के लिये ही ये देह धारण करना पड़ा !
'ज्ञानांतराय' जाये,
'मैं कौन हूँ' यह लक्ष-प्रतीति-अनुभव के साथ प्राप्त हो जाये
तभी आत्मज्ञानी के ज्ञान-प्रकाश से
सारी कर्म-रज को झाड़ा जा सकता है
और आत्यंतिक मुक्ति का वरण किया जा सकता है
ऐसा वीतरागों का 'विज्ञान' है ।

ऐसी मर्म-द्योतक पुस्तिका
सब लोगों को मुक्ति फलदायी बने, यही प्रार्थना करता हूँ ।

- जी. ए. शाह
(पूर्व सकल संघपति) जय सच्चिदानंद संघ

संपादकीय

इस काल में लोगों को कोई भी कार्य करने में बहुत सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, काम को पूर्ण करने में अनेक अवरोध आते हैं। स्वयं के पास वस्तु होने के उपरांत भी वे उस वस्तु को भोग नहीं सकते हैं। उधार दिये हुए रुपये जब स्वयं को ज़रूरत हो, तब वापस प्राप्त नहीं होते हैं। नौकरी-धंधे में सफलता नहीं मिलती है। अच्छी से अच्छी खाने की चीज़ें, जब अन्य लोग उन्हें खा रहे हों तो स्वयं उन्हें खा नहीं सकते। अमुक विषयों(बाबतों) की या तो समझ ही नहीं पड़ती या उन्हें समझने में अत्यंत देर लगती है, विशेष रूप से धर्म की बातें। भगवान की वाणी, आध्यात्मिक सत्संग का महत्त्व कहने-सुनने में आने पर भी समझ में नहीं आता और न उसका लाभ ही उठाया जा सकता है। ऐसे तमाम प्रकार के अवरोध एक प्रकार के कर्म ही हैं जिन्हें आध्यात्मिक परिभाषा में 'अंतराय कर्म' कहते हैं। आठ प्रकार के मुख्य कर्म होते हैं - ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय, वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य; इनमें पहले चार कर्मों को घाती कर्म कहते हैं, उनका क्षय हुए बिना केवलज्ञान प्रकट नहीं होता। उन महत्त्वपूर्ण कर्मों में एक कर्म है, यह 'अंतराय कर्म'।

प्रस्तुत पुस्तिका में "ज्ञानी पुरुष" परम पूज्य 'दादा भगवान' द्वारा कथित 'अंतराय कर्म' पर हुए सत्संग को संकलित (एकत्र) किया गया है। उसमें 'अंतराय कर्म' किसे कहा जाता है ? वह किस प्रकार बँधता है ? उससे क्या नुक़सान होता है ? उसके विभिन्न प्रकार और उनसे मुक्त होने के उपायों को संकलित किया गया है। व्यवहार में बाधक अंतराय कर्म जैसे कि लक्ष्मी, आहार, लाभ से लेकर ठेठ निश्चय में बाधक, आत्मज्ञान और दर्शन के अंतरायों तक की बातें इसमें शामिल हैं। उनमें अत्यंत गंभीर ज्ञानांतराय और दर्शनांतराय, जो अत्यंत बाधक अंतराय कर्म हैं और जिनके कारण दूसरे अंतराय भी पड़ सकते हैं और विशेष करके आत्मज्ञानी पुरुष और मोक्षमार्ग के अंतराय जाने-अनजाने किस प्रकार पड़ते हैं ? उनसे कितना अधिक नुक़सान होता है ? उसकी अत्यंत उपयोगी जानकारी दी गई है।

प्रकट ज्ञानी पुरुष परम पूज्य कनुदादाजी को उनके आशीर्वाद हेतु अहोभावीय अभिनंदन और पूर्व सकल संघपति श्री जी. ए. शाह साहब को उनके सहयोग के बदले हृदयपूर्वक अत्यंत आभार।

इस पुस्तिका के द्वारा पाठकगण (वाचक) नये अंतराय कर्म बाँधने से अटकें और बँध चुके अंतरायों से मुक्त होकर मोक्षमार्ग को प्राप्त करें, इसी अभ्यर्थना सहित...

-पुलिनआनंद जी
के
जय सच्चिदानंद

Mo. : 94270 88696
E-mail : pulinanand@yahoo.com

परस्पर

अंतराय कर्म से मुक्ति

आप्तपुत्र स्वामी श्री पुलिनआनंद द्वारा संकलित 'अंतराय कर्म' पुस्तिका का महात्माओं तथा विशेष करके मानव समाज में अत्यंत स्वागत हुआ है। यही इस पुस्तिका की उपयोगिता को दर्शाता है।

सद् और असद् ये दोनों तत्त्व मानव समाज में रहते हैं। असद् के प्रति धिक्कार, निंदा, तिरस्कार का भाव करके हम अभिप्राय बाँधते हैं, यह योग्य है या अयोग्य है उसको नोट करते रहें तो उसका परिणाम क्या आता है ? पूर्वग्रह से प्रेरित होकर व्यक्ति की अपकीर्ति करने का अधिकार कई बार भोगते हैं ! अनुकरण, प्रतिस्पर्धा, लालसा, ईर्ष्या, महत्त्वाकांक्षा द्वारा स्वयं की रेखा को बड़ी करके दूसरे की रेखा को छोटी करने में अवर्णवाद का जन्म होता है। खंडन-मंडन करके अतिशयोक्ति दर्शा कर स्वयं के Superiority Complex के द्वारा किसी के लिए 'लेबलिंग' करके व्यक्ति 'अंतराय कर्म' का जोखिम उठाता है।

अन्य व्यक्ति को नामशेष करने की चेष्टा से स्वयं की आंतरिक 'स्व' की मुद्रा विकृत होती है। व्यक्ति को यह पता ही नहीं है कि वह 'अंतराय कर्म' की खाई में जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को अवगति होगी जिसकी उसे कल्पना भी नहीं होती।

मनुष्य अपनी सुविधा के लिए भिन्न-भिन्न अवसरों पर अलग-अलग मान्यतायें प्रकट करके स्वयं को छलकर स्वयं के मत को दूसरों पर थोपने के लिये सत्य को ढँक देने की युक्ति करता है। ये सारे ही चिह्न-लक्षण 'अंतराय कर्म' के हैं।

प्रश्न यह होता है कि 'अंतराय कर्म' के निवारण के क्या कोई उपाय है ?

"प्रत्येक शब्द बोलना जोखिम से भरा है, अगर बोलना ना आये तो मौन रहना अच्छा। उसमें भी धर्म में बहुत ही जोखिम है; व्यवहार की जोखिम तो उड़ जाती है, सांसारिक बुद्धि के अंतरायों की बहुत अड़चन नहीं है, परंतु धार्मिक बुद्धि के अंतराय तो अनंत अवतार तक व्यर्थ भटका कर मारेंगे। उसमें भी 'रिलेटिव' धर्म के अंतराय टूटे हुए होते हैं; तब 'रियलधर्म', आत्मधर्म के अंतराय बहुत पड़े हुए होते हैं।"

अब धर्म के अंतराय कैसे पड़ते है ? 'मैं कुछ जानता हूँ, यह बड़े से बड़ा अंतराय ! धर्म में जाना कब कहलाता है ? कभी भी ठोकर नहीं लगे, आर्तध्यान, रौद्रध्यान न हो, रौद्रध्यान का अल्प परिणाम भी उत्पन्न न हो, ऐसा संयोग भी एकत्र न हो, इसका नाम 'जाना' कहलाता है। इसलिये भगवान ने क्या कहा, कि 'जब तक आर्तध्यान और रौद्रध्यान हैं तब तक 'मैं कुछ भी नहीं जानता, ज्ञानी पुरुष जानते हैं' ऐसा बोलना। तब तक सिर पर जवाबदारी मत लेना, बहुत जोखिम है, दूसरे स्टेशन पर उतार देंगे। भगवानने सबसे बड़ा अंतराय ज्ञानांतराय को कहा है। लक्ष्मी और दान के अंतराय टूट जाते हैं, परंतु ज्ञान के अंतराय जलदी नहीं टूटते।

सुविचार, विनय, appreciation जैसे गुण विकसित करके स्वयं की पूर्णता में विकसना चाहिए। संतपुरुष, सत्पुरुष, ज्ञानी पुरुष इन सारे संबंधों से अलिप्त रहकर स्वयं में ही विस्तरित होकर और केवलगामी बनकर समाज का समझदारी से समन्वय कराकर अंतराय कर्म की प्रक्रिया में से मुक्त होके धन्य बने।

'अंतराय कर्म' पुस्तिका के संकलन हेतु स्वामी आप्तपुत्र श्री पुलिनआनंद की प्रशंसा करते हुए आनंद हो रहा है। इस पुस्तिका के मुद्रणदोष, विगतदोष को सुधारकर इसे अद्यतन स्वरूप प्रदान करने के लिए 'अक्रम विज्ञान' सामयिक के संपादक साक्षर श्री राधेश्याम शर्मा, कवि श्री विष्णु पाठक तथा महात्मा पुष्पा बहन मेहता के योगदान की संघ कद्र करता है। जय सच्चिदानंद....

-सुधीर शाह (सकल संघपति)
जय सच्चिदानंद संघ

अंतराय-निवारक सीढ़ी

अंतराय का स्वरूप ११
ऐसे पड़ते हैं अंतराय १३
- रोकने से १३
- तिरस्कार से १५
- दुत्कारने (या छिट् छिट् करने) से १५
- अक्ल के अहंकार से १६
- अति बारीकी से अंतराय १८
- वस्तु के अंतराय १८
- रोग में दख़लगिरी से अंतराय १९
- सच्ची बात न सुनने से (‘दादाजी’के बहरेपन का कारण) २१

अंतराय से बचने के उपाय २३
- प्रतिक्रमण २३
- अनजान बन जाइये २३
- परिणाम समझाइये २४

अंतराय के अन्य प्रकार २६
- भोग-उपभोग अंतराय २६
- लाभांतराय २७
- अक्ल के अंतराय २९
- धर्म में अंतराय २९
- ज्ञानांतराय, दर्शनांतराय ३१
- वर्तन के अंतराय ३३
- आयुष्य के अंतराय ३३
- अति इच्छा से अंतराय ३५
- ‘अक्रम विज्ञान’ के अंतराय ३६

अंतराय तोड़ने के उपाय ४१
- विरोधी स्वभाव से ४१
- प्रतिक्रमण से ४३
- ‘विल पावर’ से ४३
- ‘ज्ञानी पुरुष’ से प्रार्थना ४४
- आत्मज्ञान के द्वारा ४५
- “ज्ञानी-पुरुष” के द्वारा ४५
- ज्ञानी उतारते हैं कृपा ४५
- दृढ़ निश्चय से ४६
- **आत्मवीर्य** ५२
- **रत्नकणिका** ५४
- विशेष नोंध ५५-५६

■

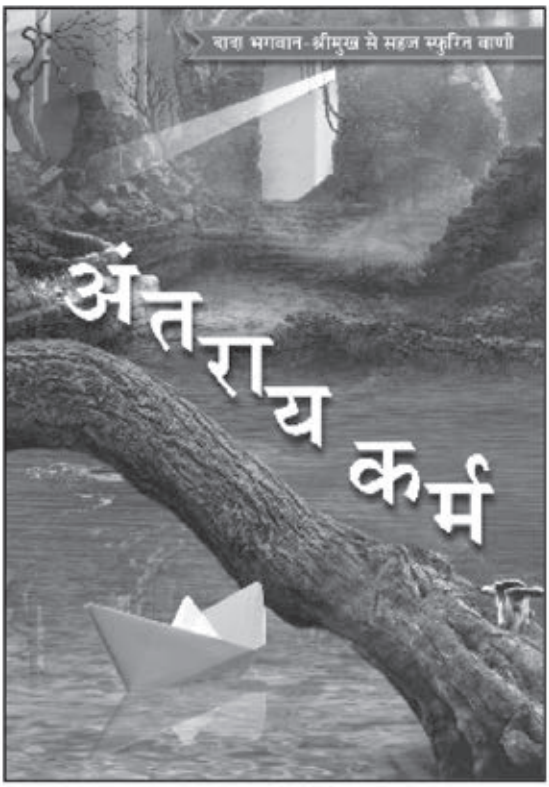

आत्मा और मोक्ष के बीच कितनी दूरी है ?
कुछ भी दूरी नहीं है,
ये जो अंतराय पड़े हुए हैं, उतनी ही दूरी है।
यदि अंतराय कर्म टूटे तो फिर
क्षणभर भी देर नहीं लगती।

-दादाश्री

अक्रम विज्ञान के अंतराय

कुछ लोग कहते हैं कि : "ऐसा अक्रम ज्ञान तो होता होगा भला ? एक घंटे में मोक्ष होता होगा भला ?" ऐसा बोलते ही उन्हें अंतराय खड़े हो गए। इस जगत् में क्या कुछ नहीं होता यह कह नहीं सकते। अत: बुद्धिसे नापने जैसा यह जगत् नहीं है। क्योंकि यह संभव हुआ है यह तो हकीकत है। 'आत्मज्ञान' के मामले में तो विशेषकर अंतराय डाले होते हैं। यह (अक्रमज्ञान) अंतिम स्टेशन है।

-दादाश्री